"बिहारी का वियोग वर्णन"

रीतिकालीन कवियों ने अपने काव्य में विभिन्न काम-दशाओं के साथ-साथ वियोग शृंगार का मार्मिक वर्णन किया है। वियोग के प्रमुखतः चार भेद — पूर्वराग, मान, प्रवास और करुण माने गए हैं। वियोग का तात्पर्य मिलन का अभाव से है। बिहारी ने वियोग के सभी भेदों का वर्णन अपने काव्य में विस्तार से तल्लीनता के साथ किया है। किसी के गुणों को सुनकर या उसके रूप-सौन्दर्य को देखकर हृदय में उसके प्रति अनुराग एवं आकर्षण पैदा होता है, किन्तु किसी कारणवश वे परस्पर मिल नहीं पाते इस दशा में "पूर्वराग" वियोग होता है। बिहारी ने पूर्वानुरागिनी नायिका की व्यथित दशा का वर्णन करते हुए लिखा है कि जब से उसके नेत्र नायक के छवि रूपी जाल में गिरे हैं, तब से एक क्षण के लिए भी उससे बिछुड़ नहीं पाते तथा समय-सूचक कटोरी की भाँति निरन्तर भरते-ढरते, डूबते-उतराते रहते हैं —

"हरि छवि जल जब तें परे, तब तें छिनु बिछुरैं न।
भरत, ढरत, बूड़त, तरत, रहत घरी लौं नैन॥"

नायक के अंग-प्रत्यंग की शोभा में नायिका का चित्त इस प्रकार से फँस गया है जैसे भँवर में पड़ी नाव जो बार-बार चक्कर लगाती हुई उसी में डूब जाती है —

"फिरि-फिरि चितु उत ही रहतु टुटी लाज की लाव।
अंग-अंग छवि झोर में, भयो भौंर की नाव॥"

बिहारी ने 'मान' वियोग का वर्णन खूब किया है। मान वियोग के दो भेद — प्रणय मान और ईर्ष्या मान हैं।

प्रणय-मान वहाँ होता है, जब नायक-नायिका छोटी सी बात पर यूँ ही रूठ जाते हैं। ईर्ष्या मान वहाँ होता है, जब नायक को किसी अन्य कामिनियों के प्रति आसक्त देखकर नायिका के हृदय में ईर्ष्या भाव या रोष उत्पन्न होता है। प्रणय-मान का वर्णन करते हुए बिहारी ने मानिनी नायिका और मानी नायक का चित्रण करते हैं। जिसमें दोनों को अपने-अपने रूप-सौन्दर्य के घमण्ड में चूर दिखाया गया है और दोनों ही एक दिन यह ठान लेते हैं कि देखें पहले कौन मानता है और पहले कौन मान छोड़ता है — "दोऊ अधिकाई-भरे एकै गौं गहराइ।
कौनु मनावै, को मनैं, माने मन ठहराइ॥"

ईर्ष्या-मान का उदाहरण निम्न दोहा में देखा जा सकता है, जिसमें एक ऐसी नायिका के मान का वर्णन है, जो नायक को बुलाने के लिए अपनी दूती भेजती है, किन्तु वह दूती नायक के साथ रमण करके फिर उसे अपने साथ लाती है। रमण करने के कारण दूती और नायक की आँखें सकुचा रही हैं, जिससे नायिका को उनकी चोरी का पता चल जाता है और वह ईर्ष्या-मान कर बैठती है —
"गह्यौ अबोलौ बोलि प्यो, आपुहि पठै, बसीठि।
दीठि चुराई दुहनु की, लखि सकुचौंही दीठि॥"

बिहारी का मन प्रवास सम्बन्धी विरह वर्णन में ज्यादा रमा है। नायक के विदेश जाने की खबर सुनकर नायिका अत्यन्त दुःखी एवं बेचैन है। उस क्षण प्रिय के परदेश जाने की बात सुनकर वह चुप हो जाती है तथा बेचैनी के मारे एक शब्द भी मुँह से

नहीं बोल पाती। मानो प्रिय की डबडबाई हुई दृष्टि ने उसके गले को रुँध्य दिया हो —

"ललन-चलनु सुनि चुप रही, बोली आयु न ईठि।
राख्यौं गाहि गाढ़ै गरे, मनौ गलगली डीठि॥"

नायक के परदेश में रहने पर नायिका के विरह दशा का हृदय-विदारक वर्णन करते हुए बिहारी कहते हैं — "आड़े दै आले बसन, जाड़े हूँ की राति।
साहसु करै सनेह-बस, सखी सबै ढिंग जाति॥"

यहाँ पर नायिका को विरह की अग्नि में जलते हुए दिखाया गया है। विरह की अग्नि से अपने शरीर को बचाने के लिए वह जाड़े की रात में भी गीले कपड़ों की आड़ देकर और बड़ी हिम्मत करके उसकी सखियाँ स्नेह के कारण उसके समीप जाती हैं। बिहारी ने विरहिणी नायिका के सन्ताप का चित्रण करने के लिए अतिशयोक्ति का अधिक सहारा लिया है। प्रिय के प्रवास के कारण विरह के मारे नायिका इतनी क्षीण हो गई है कि चश्मा लगाकर देखने पर वह दिखाई नहीं देती है —

"करी विरह ऐसी तऊ गैल न छाँड़तु नीचु।
दीने हूँ चसमा चखनु चाहै लहै न मीचु॥"

बिहारी ने करुण विप्रलंभ का वर्णन बहुत कम किया है। बिहारी के काव्य में करुण विप्रलंभ का उदाहरण राधा और गोपियों के विरह चित्रण में देखने को मिलता है। राधा की विरह का वर्णन करते हुए बिहारी लिखते हैं कि राधा यमुना के किनारा को देखती हुई कृष्ण को याद करके अपने आँसुओं से यमुना के जल को खारा करती रहती है —

"स्याम सुरति कर राधिका, तकति तरनिजा-तीर।
अँसुवनि करति तरौंस कौ खिनकु खरौहौं नीर॥"

एक अन्य दोहे में गोपियों की विरहावस्था का वर्णन करते हुए बिहारी बताते हैं कि गोपियों के विरह के कारण ब्रज की गली-गली तथा द्वार-द्वार पर गोपियों के आँसुओं से भरी हुई ऐसी नदी बह रही है, जो कभी सूख नहीं सकती है —

"गोपिनु कैं अँसुवनु भरी, सदा असोस अपार।
डगर-डगर नैं ह्वै रही, बगर-बगर कैं बार॥"

वस्तुतः निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि बिहारी के विरह वर्णन में विरहिणी की विरह-ताप-जन्य कृशता, तीव्र संताप, व्यथा एवं वेदना का प्राधान्य है। इसलिए यह कह सकते हैं कि बिहारी को वियोग वर्णन में उतनी सफलता नहीं मिली है, जितनी संयोग वर्णन में। इसका कारण यह है कि वियोग वर्णन में बिहारी की दृष्टि स्वाभाविक चित्रण से हटकर चमत्कार और अतिशयोक्ति पूर्ण कथन की ओर ज्यादा लगी है।

डॉ० राकेश कुमार
हिन्दी विभाग
शेरशाह महाविद्यालय, सासाराम, रोहतास